بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुत्ब: जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 06 फ़रवरी 2026, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद, यू.के.

(तबलीग़ महीने की तिथि 06,1405 हश)

आँहज़रत ﷺ की इबादते इलाही का ईमान को बढ़ाने वाला तज़्किरा (वर्णन)।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-06.02.2026

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशाहुद, तअव्वुज़ और सूरह अल-फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुजूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला बिनसृहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- जैसा कि अल्लाह तआला ने हमें फ़रमाया है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमारे लिए उस्वा-ए-हसना (उत्तम आदर्श) हैं और हर मामले में आदर्श हैं। पिछले ख़ुत्बों में इसी तरह के नमूनों में आँहुज़ूर ﷺ की मुहब्बत-ए-इलाही का ज़िक्र हो रहा था। इबादत मुहब्बत-ए-इलाही के बिना नहीं हो सकती और मुहब्बत-ए-इलाही इबादत के बिना नहीं हो सकती। अगर अल्लाह तआला की मुहब्बत न हो तो हक़ीक़ी इबादत हो ही नहीं सकती। आज इसी के बारे में आगे बयान करूंगा।

अल्लाह तआला ने हुज़ूर ﷺ के मयार-ए-मुहब्बत (प्रेम के स्तर) को क़ुरआन करीम में इस तरह बयान फ़रमाया है:**"क़ुल इन्ना सलाती व नुसुकी व महयाया व ममाती लिल्लाहि रब्बिल आलमीन"** यानी कह दो कि मेरी नमाज़, मेरी कुर्बानियाँ, मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है, जो तमाम जहानों का रब है। अल्लाह तआला ने आप ﷺ को यह ऐलान करने का हुक्म देकर हमें भी इन मायारों (मानकों) को हासिल करने की ओर ध्यान दिलाया है।

हुज़ूर फ़रमाते हैं: इबादत के बारे में कुरआन करीम में अल्लाह तआला ने आप ﷺ के ज़रिये से हमें बेशुमार अहकाम बयान फ़रमाए हैं। फ़रमाया: **"वमा ख़ल्कतुल जिन्न वल इन्सा इल्ला लियाबुदून"।**

और मैंने जिनों और इंसानों को पैदा नहीं किया मगर इस लिए कि वे मेरी इबादत करें। फिर एक जगह फ़रमाया- **"या अय्युहन्नासुअबुदु रब्बुकुमुल्लज़ी ख़ल्ककुम वल्लज़िना मिन क़बलिकुम लअल्लकुम तत्तक़ून।"** ऐ लोगो! अपने रब की इबादत करो, जिसने तुम्हें पैदा किया और लोगों को भी जो तुमसे पहले थे, ताकि तुम तकवा (परहेज़गारी) इख्तियार करो। इस प्रकार अल्लाह तआला का क़ुर्ब (निकटता) हासिल करने और तक़वा अख्तियार करने के लिए ज़रूरी है कि अल्लाह की इबादत की जाए और इबादत के मायार को बुलन्दतर किया जाए।

हज़ूर फ़रमाते हैं: जब आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने हमें ये हुक्म दिया तो उसकी इन्तिहा (अंतिम सीमा,पराकाष्ठा) भी अपने अमल से करके दिखा दी और फिर हमें ध्यान दिलाया कि हकीकी इताअत (आज्ञापालन) और पैरवी (अनुकरण) तो तब ही पूरी होगी जब हम अपने आप को उस स्तर पर लाने की कोशिश करेंगे। आप ﷺ की वे दुआएँ जो आपने अपनी उम्मत के लिए की हैं, तभी हमें अपनी छाया में लेंगी और हमारे लिए उपयोगी रहेंगी जब हम आप स. के उसवे (आदर्श) और हुक्मों को हमेशा सामने रख कर अमल की कोशिश करेंगे।

हुज़ूर ने फ़रमाया: कुछ मिसालें (उदाहरण) पेश करता हूँ। एक रिवायत में आता है कि हज़रत आयशा رضي الله عنها बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक ऐसी चादर पर नमाज़ पढ़ी जिस पर नक्श (चित्र) बनाया गया था। आप स. उन नक्शों को एक नजर देखा। जब आप नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो फ़रमाया: "मेरी यह चादर अबू जहम के पास ले जाओ और उनकी सादी (यानी बिना चित्र वाली) चादर (अंबजानियाह) ले आओ, क्योंकि इस नक्श वाली चादर ने अभी मेरी नमाज़ में मेरी तवज्जो हटा दी थी।

हज़रत जाफ़र बिन मोहम्मद रज़ी. अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हमने हज़रत आयशा से पूछा कि आपके घर में रूलुल्लाह स. का बिस्तर कैसा होता था तो उन्होंने फ़रमाया कि वह चमड़े का था, जिसमें खजूर के रेशे भरे होते थे। हज़रत हफ़सा रजि. से पूछा गया कि आपके घर में रसूलुल्लाह ﷺ का बिस्तर कैसा था? तो आप रज़ी. ने फ़रमाया कि वह ऊन का था और हम उसे दो तहें लगा देते थे। हुजूर ﷺ उसपर सोते थे, एक रात मैंने सोचा कि क्यों न उसकी चार तहें लगा दूं ताकि यह ज्यादा नरम हो जाए। इसलिए हमने उसकी चार तहें लगा दीं। जब सुबह हुई तो आप ﷺ ने फरमाया: तुमने रात में क्या बिछाया था? मैंने अर्ज़ किया कि वह आपका ही बिस्तर था, बस हमने उसकी चार तहें लगा दी थीं ताकि वह आप स. के लिए और अधिक आरामदायक हो जाए। आप ﷺ ने फरमाया: उसे पहले जैसा ही कर दो, क्योंकि उसकी अधिक नरमी मेरे लिए रात की नमाज़ में रोक बन रही थी।

हज़रत मुआज़ बिन जबल बयान करते हैं कि मैं नबी करीम ﷺ के पीछे सवारी पर बैठा हुआ था। आप स. ने फ़रमाया: ऐ मुआज़ बिन जबल! मैंने कहा: मैं हाज़िर हूं, या रसूल अल्लाह ﷺ, और यह मेरी खुशकिस्मती है। आप स. ने फ़रमाया: क्या तुम जानते हो कि अल्लाह का बंदों पर क्या हक़ है?

मैंने कहा: अल्लाह और उसके रसूल स. सबसे ज़्यादा जानते हैं। आप स. ने फ़रमाया: अल्लाह का बंदों पर यह हक़ है कि वे उसकी इबादत करें और किसी को उसकी साझी न बनाएं। फिर आप स. कुछ दूर चले और फ़रमाया: ऐ मुआज़ बिन जाबल! मैंने कहाः लब्बैक या रसूल अल्लाह ﷺ, यह मेरी ख़ुशकिस्मती है। आप स. ने फ़रमाया: क्या तुम जानते हो कि बंदों का अल्लाह पर क्या हक़ है? मैंने कहा: अल्लाह और उसके रसूल बेहतर जानते हैं। तो आपने फरमाया: यह कि वह बंदों को अज़ाब न दे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, आँहज़रत ﷺ की मदह (प्रशंसा) में फ़रमाते हैं: जिस तरह आँहज़रत ﷺ क़ुरआन की ईशाअत के लिए मामूर (नियुक्त) थे, उसी तरह सुन्नत को स्थापित करने के लिए भी नियुक्त थे। अतः जैसे कि कुरान शरीफ़ यक़ीनी (निश्चित और प्रमाणिक) है, वैसे ही सुन्नते मामूला मुतवातिरह (निरंतर क्रिया शील सुन्नत) भी यक़ीनी है। ये दोनों सेवाएँ आँहज़रत ﷺ ने अपने हाथों से पूरी कीं और दोनों को अपना फर्ज़ समझा। उदाहरण के तौर पर जब नमाज़ का हुक्म हुआ तो आँहज़रत ﷺ ने ख़ुदा तआला के इस क़ौल (कथन) को अपने अमल से करके दिखाया और अमली रंग में (वास्तविक रूप में) ज़ाहिर कर दिया कि फ़ज्र की नमाज़ की ये रकअतें हैं और मगरिब की ये, और बाकी नमाज़ों की ये-ये रकअतें हैं। इसी तरह हज करके दिखा दिया और फिर अपने हाथों से हजारों सहाबा को इस अमल का पाबंद करके सिलसिला ए पाबंद (निरंतर परंपरा) को बड़े जोर से कायम कर दिया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. तहज्जुद के बारे में बयान फ़रमाते हैं कि रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इन नवाफ़िल का इतना ख़याल था कि बावजूद इनके नफ़ल होने के, लोगों को ध्यान से देखते थे कि सहाबा में से ये नफ़ल कौन कौन पढ़ता है। शहर की गलियों में और सड़कों पर फिरते थे ताकि पता लगाएं कि लोगों में से कौन कौन नहीं पढ़ता। हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आजकल अगर किसी से पूछ लिया जाए कि कितनी नमाज़ें पढ़ते हैं तो लोग नाराज़ हो जाते हैं कि यह हमारा निजी मामला है लेकिन आँहुज़ूर स. तो ख़ुद तहज्जुद की नमाज़ का भी जायज़ा लिया करते थे।

एक बार एक मजलिस में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रजि. का ज़िक्र आया तो आपने ﷺ फ़रमाया: आदमी तो बहुत अच्छा है, अगर वह तहज्जुद भी पढ़े। फिर आप ﷺ ने फ़रमाया: अल्लाह इस दुनिया में उस मियाँ और बीवी पर रहम करे कि अगर रात को मियाँ की आँख खुले तो उठ कर तहज्जुद पढ़े और बीवी को भी जगाए कि तू भी उठ कर तहज्जुद पढ़ और अगर वह न जागे तो उसके मुंह पर पानी का छींटा मारे और जगाए। इसी तरह अगर बीवी की आंख खुल जाए तो वह खुद तहज्जुद पढ़ ले और मियां को जगाए, और अगर वह न जागे तो उसके चेहरे पर पानी का छींटा मारे।

हजूर फ़रमाते हैं: नमाज़ों में रिकक़त (भावुकता) तारी होना भी बहुत ज़रूरी है। इसके लिए भी इंसान को कोशिश करनी चाहिए। इसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक नुस्ख़ा भी बताया है कि नमाज़ में अपनी शक्ल रोने जैसी बना लो, तो इस बाहरी हालत से भी दिल पर असर होता है और फिर इंसान का भी रोना निकल आता है।

नबी करीम ﷺ सोते समय आयतुल कुरसी, सूरह इखलास, सूरह फलक़ और सूरह नास (जो कुरान की आखिरी तीन सूरतें हैं) तीन बार अपने हाथों पर फूंकते और फिर हाथों को अपने शरीर पर फेर लेते, इस तरह फेरते कि सिर से शुरू करते और जहां तक हाथ पहुंच सकता है, वहां तक फेरते।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि कुछ लोग लिखते हैं कि कोई छोटी सी दुआ बताएं, कोई ज़िक्र बताएं जो हम करते रहें ताकि हमारे अंदर नेकियाँ पैदा हो जाएँ, हमारे गुनाह मिट जाएँ, हमारा काम भी हो जाए और अल्लाह तआला का क़ुर्ब भी हासिल हो जाए। तो पहली बात तो इबादत है, यानी नमाजें जो फर्ज़ हैं, इसके बाद ज़िक्र-ए-इलाही है। ज़िक्र इंसानों को और अधिक नेकियों की ओर ध्यान दिलाता है। इसके साथ दूसरे अखलाक और अमल करना भी ज़रूरी है।

एक रिवायत में बताया गया है कि आप ﷺ जूतों सहित भी नमाज़ पढ़ लिया करते थे, यानी जहां आसानी की ज़रुरत हो उसे अपना लिया करते थे। इसलिए यदि जूती पाक हो और ऐसी जगह हो जहां (नमाज़ पढ़ते हुए) नापाकी लगने का डर हो, तो जूती पहन कर भी नमाज़ पढ़ी जा सकती है। आप ﷺ ने ऐसा करके उम्मत-ए-मुहम्मदिया पर एक बहुत बड़ा एहसान किया कि उन्हें आगे के लिए तकल्लुफ़ात (दुविधाओं) और बनावट (दिखावे) से बचा लिया गया।

रसूले करीम ﷺ जमाअत के साथ नमाज़ का इतना एहतेमाम (व्यवस्था) फ़रमाते थे कि एक बार आप स. के पास एक नाबीना (नेत्र हीन) व्यक्ति आया और उसने अर्ज़ किया: या रसूलल्लाह ﷺ! मेरा घर मस्जिद से बहुत दूर है और चूंकि मस्जिद पहुँचने में परेशानी होती है, इसलिए यदि आप बारिश के दिनों में इजाज़त देते हैं तो मैं अपने घर पर ही नमाज़ अदा करूँ। आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया: ठीक है, पढ़ लिया करो। वे वहां से चले गए तो थोड़ी देर बाद आप स. ने सहाबा रज़ी. से फ़रमाया कि उनको वापस बुला कर लाओ। जब वे वापस आए तो आप स. ने फ़रमाया: क्या तुम्हारे घर तक अज़ान की आवाज़ पहुँचती है? उसने अर्ज़ किया: जी हाँ, या रसूल अल्लाह ﷺ! अज़ान की आवाज़ तो पहुँच जाती है। आप स. ने फ़रमाया: अगर अज़ान की आवाज़ घर पहुंच जाती है तो फिर मस्जिद में आओ।

अल्लाह तआला हमें इबादत का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ दे, आप स. के उस्वा ए हसना को अपनाने की तौफ़ीक़ दे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ
سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا
شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ
ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ
وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131